

संज्ञानात्मक वसिगत

मेन्स के लयि:

संज्ञानात्मक वसिगत अवधारणा, नैतकता और मानव इंटरफेस

संज्ञानात्मक वसिगत:

परचिय:

- संज्ञानात्मक वसिगत की परभाषा है बेचैनी की वह भावना जो कसिी के वशिवास, दृषुकिण, मूल्यों और उसके कार्यों के बीच आपसी तनाव के कारण पैदा होती है ।
- संज्ञानात्मक वसिगत की धारणा 1950 के दशक में अमेरकी संज्ञानात्मक लयिण फेसुगिर द्वारा वकिसति की गई थी ।
- फेसुगिर को वशिवास था क लीगों को उनके वशिवासों, दृषुकिणों और व्यवहारों के सामंजस्य एवं संबद्धता को बढ़ावा देने के लयि प्रेरति कयिा गया था । ऐसे में जब लीगों में यह भावना वकिसति हो जाती है क उनके मानसक सामंजस्य में खराबी आ गई है, तो वे अपनी संज्ञानात्मक वसिगत को समाप्त करने का प्रयास करने लगेंगे ।

परीक्षण:

- फेसुगिर ने एक प्रयोग कयिा जसिमें लीगों को एक नीरस, दोहराव वाला (पेंचों को मोड़ने) काम करना था ।
- उन्हें कसिी से झूठ बोलने के लयि पैसा दयिा गया और फरि उस वयकत को यह समझाने का प्रयास करना था क किय दलिचस्प था ।
- फेसुगिर ने दो समूह बनाए, एक समूह के सदस्यों को छोटी राशक भुगतान कयिा गया और दूसरे समूह को एक बड़ी राशक भुगतान कयिा गया । फेसुगिर ने पाया क जनि लीगों को अधिक पैसा दयिा गया था उन्होंने कम संज्ञानात्मक वसिगत क अनुभव कयिा ।

संज्ञानात्मक वसिगत सिद्धांत:

- यह न केवल कसिी के वशिवासों और कार्यों के बीच तनाव से उत्पन्न होने वाली असुवधि की भावनाओं को समझाने का प्रयास करता है बल्क यह भी वशिलेण करता है क लीग इस तनाव को कैसे हल करते हैं ।

संज्ञानात्मक वसिगत क कारण:

बाध्यकारी अनुपालन व्यवहार:

- बाध्यकारी अनुपालन एक ऐसी स्थति है जसिमें एक वयकत को ऐसा किय करने के लयि मजबूर कयिा जाता है जो उसके वशिवासों के वपिरीत है ।
- चूँक किय पहले ही हो चुका है और व्यवहार को बदला नहीं जा सकता है, वसिगत को कम करने का तरीका यही है क वयकत अपने द्वारा कयि गए कार्यों का पुनर्मूल्यांकन करे ।

नरिणयन:

- नरिणय अक्सर वसिगत पैदा कर सकते हैं कयोंक नरिणयों में एक वकिल्प को दूसरे पर चुनना शामिल होता है, जसिका अर्थ है एक वकिल्प के नुकसान को स्वीकार करना ।

उदाहरण:

- कसिी वयकत को एक बड़े शहर में नौकरी का ऑफर मलिता है, लेकनि नौकरी के प्रस्ताव को अस्वीकार करने का मतलब है दोस्तों व परिवार के पास रहना ।
- दोनों वकिल्पों के अपने-अपने लाभ और हानि हैं: अगर वह वयकत नौकरी को स्वीकार कर लेता है तो अपने प्रयिजनों से दूर हो जाएगा और यद नौकरी ठुकरा देता है तो शहर में उपलब्ध अवसरों से चूक जाएगा ।

प्रयास:

- अधकिंश लोग बड़े लक्ष्यों को ज्यादा महत्त्व देते हैं जसिे प्राप्त करने के लयि अत्यधिक प्रयासों की आवश्यकता होती है ।
- लेकनि संज्ञानात्मक वसिगत तब भी हो सकती है जब कोई वयकत कुछ हासलि करने के लयि बहुत प्रयास करता है और बाद में वही नकारात्मक या अवांछनीय हो जाता है ।

संज्ञानात्मक वसिगत को कैसे हल कयिा जा सकता है?

परचिय:

- ऐसे कई तरीके थे जिनसे व्यक्तियों या समूहों ने अपनी परस्थितियों के अनुकूल संज्ञानात्मक वसिंगतिका समाधान किया।
- व्यक्तियों अपने विचारों को बदल सकता है, अपने विचार और व्यवहार को सुमेलित कर सकता है, अपने व्यवहार को सही ठहराने के लिये एक विचार जोड़ सकता है अथवा विचारों एवं व्यवहार के बीच वसिंगतिको कम सकता है।

■ उदाहरण:

- X एक 25 वर्षीय स्नातक (बेरोज़गार) है जिसने हाल ही में एक राजनीतिक दल का समर्थन करना शुरू किया है।
- वह उस राजनीतिक दल का अनुकरण करता है क्योंकि वह सत्ता में आने पर देश में युवाओं के लिये बेहतर रोज़गार के अवसर और विकास प्रदान करने के उनके वादों में विश्वास करता है।
- उसकी पार्टी चुनाव जीत जाती है। सत्ता में उस पार्टी के पाँच साल पूरे होने के बावजूद रोज़गार के क्षेत्र में कुछ खास बदलाव नहीं आया है और X अभी भी बेरोज़गार है। चूँकि अगला चुनाव आने वाला है, उस राजनीतिक पार्टी के सदस्य फरि उसकी मदद मांगते हैं। ऐसी स्थिति में X क्या करेगा?
 - **X उस स्थिति के विषय में अपनी राय बदल सकता है:**
 - वह अपने पड़ोसियों A और B, जो कांग्रेसियुट हैं, की ओर देखता है। उन्होंने अपनी गली में ही चाय और समोसे की दुकान खोली है।
 - **व्यावहारिक अर्थों में न सही**, लेकिन X ने नषिकर्ष नकाला कि उसकी पार्टी के सत्ता में आने के **बादौकरियों का सृजन हुआ है**। ऐसे में इस स्थिति के विषय में उसकी राय बदलती है और **उसके विश्वास की वसिंगतिके में कमी आती है**। इस प्रकार बदले हुए नज़रिये के साथ वह फरि से उसी राजनीतिक पार्टी को वोट देगा।
 - **उस स्थिति के प्रति X अपना व्यवहार बदल सकता है:**
 - वह समझता है और स्वीकार करता है कि जिस राजनीतिक दल का उसने समर्थन किया था, उसके वादे झूठे थे और अब उन पर भरोसा नहीं करने का फैसला लेता है।
 - **X एक और तरह से सोच सकता है:**
 - वह अपनी सरकार की गतिविधियों का विश्लेषण करता है और नषिकर्ष नकालता है कि **भिले ही सरकार नौकरियों प्रदान करने में वफिल रही** लेकिन पछिले पाँच वर्षों में उसकी पार्टी के नेतृत्व में, सर्वोच्च न्यायालय, पुलों, सड़कों आदिके निर्माण के रूप में विभिन्न **अवसंरचनात्मक विकास** हुए हैं।
 - **अपने राजनीतिक दल के समर्थन को तर्कसंगत बनाने** के लिये वह एक अन्य तरीके से सोचता है और ऐसा करते हुए अपने विचारों एवं व्यवहार के बीच संज्ञानात्मक वसिंगतिको हल करता है। वह अभी भी उसी पार्टी को इस उम्मीद के साथ वोट देगा कि पार्टी अपने वादे को पूरा करेगी तथा अगले कार्यकाल में अपने नागरिकों को रोज़गार प्रदान करेगी।
 - **X वसिंगतिको कम कर सकता है:**
 - वह अपनी पार्टी के सत्ता में आने के बाद अपने देश की स्थितिकी तुलना आर्थिक रूप से गरीब पड़ोसी देशों के साथ करता है।
 - वह पाता है कि **उसके देश में शक्ति युवाओं में से केवल 40% ही कार्यरत** हैं, जबकि पड़ोसी देशों में यह हसिसा 30% से भी कम है।
 - इस प्रकार अपने राजनीतिक दल के शासन में दोषों को कम करने (दोष नकालने की प्रवृत्तिसे बचने) से उसके विचारों और व्यवहार के बीच वसिंगतिके कारण उत्पन्न तनाव कम होता है।
 - इस प्रकार वह उसी राजनीतिक दल को वोट देना जारी रखेगा क्योंकि अब उसने उस पार्टी का समर्थन करने को उचित ठहराया है।

सविलि सेवक को संज्ञानात्मक वसिंगतिका अनुभव:

- एक IPS अधिकारी जो अहसिसा में विश्वास करता है या कसिसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता, उसे जब लाठीचार्ज का फैसला लेना पड़ता है या भीड़ को नियंत्रित करने के लिये पैलेट गन का इस्तेमाल करना पड़ता है तो वह संज्ञानात्मक वसिंगतिका अनुभव करता है।
 - **नैतिक आचरण का सख्त अनुपालन** सार्वजनिक और नजिजी जीवन दोनों में कुछ उद्देश्यों को पूरा करने में समस्यार्ण उत्पन्न करता है, जिसके कारण व्यक्तिके भीतर नरिशशा उत्पन्न होती है। कई बार इमानदार होना भी लोकसेवकों को शक्तिशाली नहिति स्वार्थों के खिलाफ खड़ा कर देता है, जिससे उसके एवं उसके परिवार का जीवन खतरे में पड़ जाता है तथा उसके दमिाग में वसिंगतिके उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है।
 - **विकास बनाम पर्यावरण:** कसिसी लोकसेवक को उस समय वसिंगतिका सामना करना पड़ सकता है, जब उसे कसिसी भी विकास परियोजना के लिये जनजातीय आबादी के वसिंथापन पर नरिणय लेना होता है।

नषिकर्ष:

- एक लोकसेवक को **सदैव संवैधानिक नैतिक मूल्यों तथा सेवाओं की आचार-संहति** का पालन करना चाहिये और संज्ञानात्मक वसिंगतिके कसिसी भी मामले में सार्वजनिक सेवा के नैतिक ढाँचे के तहत कार्य करना चाहिये।
- जब भी इस तरह की स्थिति उत्पन्न होती है, तो **भावनात्मक बुद्धिमत्ता लोकसेवकों के लिये एक उपचारात्मक उपाय** हो सकती है।

स्रोत: द हट्टि

